हिन्दी-विभाग डॉ० कविता कुमारी सिंह

पी० जी०, द्वितीय सेमेस्टर

विषय – २० वीं सदी — यथार्थवाद का शेष भाग :—

वस्तुतः में हिन्दी उपन्यास को प्रौढ़ता मुंशी प्रेमचन्द के हाथों मिली। उनसे पूर्व का उपन्यास साहित्य मात्र कौतूहल की सृष्टि करनेवाला था। उपन्यास को मानव-जीवन के अत्यधिक निकट लाने का श्रेय प्रेमचन्द ही को है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों को मानव-जीवन की पृष्ठभूमि पर प्रतिष्ठि किया। उन्होंने अपने उपन्यासों द्वारा किसानों की आर्थिक व्यवस्था, ग्रामीण जीवन की दुर्बलता, विधवाओं तथा वेश्याओं की समस्या, समाज कुरीतियों, हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य, जमींदारों तथा पू के अत्याचारों आदि तत्कालीन परिस्थितियों प्रकाश डाला है। 'सेवासदन' में उन्होंने सुम नामक पात्र द्वारा तत्कालीन वेश्याओं के की समस्या का चित्रण कर उनके सुधार के

8.00 के उपाय की तलाश है। 'प्रेमाश्रय' में प्रेमचन्द
9.00 ग्रामीण जीवन की ओर मुड़े। इसमें ग्रामीण जीवन
10.00 से संबंधित जमींदार, पटवारी, मुंशी, वकील, डॉक्टर
पुलिस अफसर आदि वर्ग का चित्रण ऐसे ढंग से
11.00 किया है कि यह स्पष्ट होता है कि उनके द्वारा
12.00 ग्रामीण जनता भयंकर रूप से आक्रांत था।
रंगभूमि में प्रेमचन्द की कला का पर्याप्त विकसित
1.00 रूप मिलता है। इस उपन्यास में उन्होंने सामाजिक
तथा राजनैतिक समस्याओं पर प्रकाश डालते
हुए समय नगर, ग्राम, कर्तव्य, प्रेम, सुख-दुख
आशा, आकांक्षा, ध्येय, अधिकार आदि को
लेकर भारतीय जीवन में क्रांति की भावना
के बीज बोये हैं। 'गोदान' हिन्दी उपन्यास की
एक अमर कलाकृति है। वर्ग-वैषम्य का
इसका मूल उद्देश्य है। नायक होरी भार
दीन-हीन कृषक-वर्ग का प्रतिनिधि है।

प्रेमचन्द युग में ही 'प्रसाद'
भी आते हैं। इन्होंने 'कंकाल', 'तितली'

'इरावती' इन तीन उपन्यास को लिखकर हिन्दी-उपन्यास की भी श्री-वृद्धि में योग दिया। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी उन सभी कलाकृतियों को यथार्थवादी उपन्यास की संज्ञा देते हैं, जिनमें व्यक्तिगत जीवन-घटना, व्यक्तिगत चरित्र, व्यक्तिगत जीवन-दर्शन व्यक्तिगत मनोविज्ञान या व्यक्तिगत जीवन समस्या का निरूपण या निर्देश सर्वोपरि रहता है।

कुछ विख्यात उपन्यासों के स्वपबंध[illegible] स्वपविश्लेषण से यह सहज ही पहचाना जा सकता है। यद्यपि प्रत्येक उपन्यास में यथार्थ के विशिष्ट पहलू को उजागर करने के लिए एक प्रधान[illegible] होती है, चाहे अत्यन्त प्रमुख और गतिशील अ[illegible] मार्गदर्शक अथवा आलम्बन। तथापि उपन्य[illegible] में उनकी स्थिति और महत्व एक सा नहीं होत[illegible] निर्धारण उपन्यासकार अपने विशिष्ट जीवनानुभ[illegible] और सृजन उद्देश्य के अनुरूप एक विशिष्ट प्रकार से करता है। हिन्दी उपन्यासों ने अपने विकास प्रक्रिया में अनेक मोड़ [illegible]

है। हर काल के उपन्यास साहित्य में भारतीय समाज के विभिन्न घटनाओं का चित्रण हुआ है। उपन्यास जीवन की आवश्यकताओं को समग्ररूप में चित्रित करनेवाला एक ऐसा साहित्यिक रूप है जो अपने पूर्व की कई साहित्यिक परम्पराओं को आत्मसात करते हुए भी अभिनव आदर्श के साथ प्रकट हुआ। उसमें मनुष्य के क्रिया-कलापों के चित्रण करते समय यह भी दिखाया कि किसी चरित्र के जीवन में घटित होने वाले कार्य-व्यापारों को रोचकता प्रदान करनेवाला वह उद्देश्य है।

20 वीं शताब्दी के उपन्यास को कुछ विद्वा- ने मोह-भंग का उपन्यास कहा है। वस्तुतः 20 वीं शताब्दी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजि- दार्शनिक और वैज्ञानिक केन्द्रों एवं अन्तर्द्व- की शताब्दी रही है जिसका फलस्वरूप वि- न-क्रांतियों और मुक्ति संघर्षों का होता र-